ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 2 अप्रेल -II, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

त्यागना होगा तेरा-मेरा : अन्ना

शान्तिवन। पद्मभूषण से सम्मानित प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे ने ब्रह्माकुमारी संस्था के विशाल डायमण्ड हाल में उपस्थित लगभग पच्चीस हजार ब्रह्माकुमार भाई-बहनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मेरे सामने एक प्रश्न खड़ा है कि आप सभी ज्ञानियों के सामने मैं अज्ञानी क्या बोलूँ लेकिन परमात्मा शिव बाबा के आशीर्वाद से जो मेरे शब्द निकलेंगे मैं वही बताऊँगा। सबसे पहले मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से आप सब लोग जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा की महिमा के लिए कोई शब्द नहीं है, उस सेवा की कोई कीमत नहीं हो सकती है। ऐसी सेवा को पहले मैं नमन करता हूँ।

आध्यात्मिक सेवाओं की मूर्ति ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए सामाजिक सेवाओं की मूर्ति अन्ना हजारे। साथ हैं दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु.सुनंदा, ब्र.कु शोभा संतोष भारती तथा अन्य।

'मैं और मेरे' की दृष्टि से उपर उठें

आज 'मैं और मेरे' के परे देखने की दृष्टि इन्सान में नहीं रही है। मैं और मेरा कई लोग तो मैं और मेरा कहकर भी नहीं रूकते, मेरा तो मेरा लेकिन तेरा वो भी मेरा ऐसी प्रॉब्लम बढ़ रही है ऐसी स्थिति में इतना बड़ा त्याग करना आसान नहीं है। क्या परमात्मा शिव बाबा की कृपा हमारे ऊपर हुई जो हम उनके सानिध्य में आ गये। यह सबके भाग्य में नहीं है। दुनिया में एक सौ बीस करोड़ जनता है यह सबके नसीब में नहीं होता उसके लिए प्रालब्ध होना चाहिए, हमारा पुण्य कर्म पूर्व संचित होना चाहिए। तभी हमें परमात्मा शिव बाबा के दरबार में आने का सौभाग्य मिलता है वो हमारा सौभाग्य है। सबके नसीब में नहीं है। दो अक्षर है राम-राम हरेक के मुख से नहीं निकलता, क्या बोझ उठाना पड़ता, कोई तकलीफ उठानी पड़ती सिर्फ राम कहना। वो भी हरेक के मुख से नहीं आता क्योंकि प्रालब्ध नहीं है, पूर्व संचित नहीं है, इसलिए हरेक के मुख से नहीं आता।

सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण कर रही है ब्रह्माकुमारी संस्था

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साथ हम सेवाधारी बनकर जो आये हैं। प्रालब्ध है, पूर्व संचित है इसलिए आये हैं। विद्यालय तो बहुत है, देश में है, विदेश में है, कम विद्यालय है क्या? उन सब विद्यालयों का एक ही उद्देश्य है इन्सान का निर्माण, सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण, आज हमें क्या दिखाई दे रहा है? हमने बहुत लोग निर्माण किये है, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनाये, क्या सुनते हैं हम आज, क्या पढ़ते हैं अखबार में, ब्रिज का ओपनिंग करने से पहले ब्रिज टूट गया, पानी की टंकी का ओपनिंग करने से पहले टंकी गिर गयी।

-शेष पेज 12 पर

समाजसेवी अन्ना हजारे डायमण्ड हॉल के सभागार में उपस्थित भारत तथा नेपाल से आए पच्चीस हजार से अधिक संख्या में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए।